

Quick word tests

तरक्क्री	तरक्की	आह्लाद	आह्लाद	फ्रीज	फ्रीज	मगज़	मगज़	हृत्स्थल	हृत्स्थल	सिर्फ	सिर्फ
ज़्यादा	ज़्यादा	ब्राह्मण	ब्राह्मण	हितिक	हितिक	सम्यग्ज्ञान	सम्यग्ज्ञान	ज्योत्स्ना	ज्योत्स्ना	व्हिस्की	व्हिस्की
मन्ज़ूर	मन्ज़ूर	मिस्त्री	मिस्त्री	एल्जे	एल्जे	दिग्दर्शन	दिग्दर्शन	ईषत्स्पृष्ट	ईषत्स्पृष्ट	इश्क	इश्क
इलेक्ट्रान	इलेक्ट्रान	दुष्प्रह्य	दुष्प्रह्य	उत्प	उत्प	पंक्ति	पंक्ति	उत्सुत	उत्सुत	प्रश्न	प्रश्न
स्ट्रीटकार	स्ट्रीटकार	अद्भुत	अद्भुत	उत्प	उत्प	मंगलवार	मंगलवार	सद्गति	सद्गति	रुश्द	रुश्द
छुट्टी	छुट्टी	इल्ज़ाम	इल्ज़ाम	रत्न	रत्न	दुर्लभ्य	दुर्लभ्य	सद्गन्ध	सद्गन्ध	वैशिष्ट्य	वैशिष्ट्य
महाराष्ट्र	महाराष्ट्र	अक्षरे	अक्षरे	सज़्स	सज़्स	पच्चीस	पच्चीस	उद्घाटन	उद्घाटन	ओष्ठ्य	ओष्ठ्य
ज्येष्ठ	ज्येष्ठ	ज्ञान	ज्ञान	एज्जा	एज्जा	अच्छा	अच्छा	ज़िद्दी	ज़िद्दी	मिस्त्री	मिस्त्री
दर्शात	दर्शात	मौके	मौके	ब्यर्थे	ब्यर्थे	उज़्र	उज़्र	प्रसिद्ध	प्रसिद्ध	आह्वान	आह्वान
चिट्ठी	चिट्ठी	कैंटोमेंट	कैंटोमेंट	तरक्क्री	तरक्की	संस्कृत	संस्कृत	उद्बोध	उद्बोध	आह्लाद	आह्लाद
वाङ्मय	वाङ्मय	छूट कुछ	छूट कुछ	फ़ैक्चर	फ़ैक्चर	हिंस्र	हिंस्र	द्रव	द्रव	हास	हास
वैशिष्ट्य	वैशिष्ट्य	करेंट	करेंट	डॉक्टर	डॉक्टर	छुट्टी	छुट्टी	दारिद्र्य	दारिद्र्य	अंकुड़ा	अंकुड़ा
पुनस्स्थापना	पुनस्स्थापना	राष्ट्रन	राष्ट्रन	इलेक्ट्रॉन	इलेक्ट्रॉन	चिट्ठी	चिट्ठी	अधुव	अधुव	अंतर्निहित	अंतर्निहित
स्वास्थ्य	स्वास्थ्य	काँफी	काँफी	रक्त	रक्त	विशाखपट्नम	विशाखपट्नम	मंज़ूर	मंज़ूर	अन्तः	अन्तः
कम्प्यूटर	कम्प्यूटर	हिंदू-मुस्लिम	हिंदू-मुस्लिम	वक्त्र	वक्त्र	ट्रेन	ट्रेन	मंज़ी	मंज़ी	अंतर्वेशन	अंतर्वेशन
सान्ध्य	सान्ध्य	करणाया	करणाया	युक्त्यभास	युक्त्यभास	सुपाठ्य	सुपाठ्य	स्वातंत्र्य	स्वातंत्र्य	अग्नि	अग्नि
इज़्जत	इज़्जत	स्नेह	स्नेह	वक्त्र	वक्त्र	लड्डू	लड्डू	द्वंद्व	द्वंद्व	अद्भुत	अद्भुत
उज्ज्वल	उज्ज्वल	श्री	श्री	शुक्ल	शुक्ल	ब्रह्मण्य	ब्रह्मण्य	उन्नीस	उन्नीस	छुछुंदर	छुछुंदर
प्राप्त्याशा	प्राप्त्याशा	स्त्री	स्त्री	रिक्षा	रिक्षा	उत्क्रम	उत्क्रम	इंस्टिट्यूट	इंस्टिट्यूट	हुंकार	हुंकार
इकत्तीस	इकत्तीस	ध्वां	ध्वां	पक्ष	पक्ष	उत्क्षेप	उत्क्षेप	उन्हें	उन्हें	हित इच्छुक	हित इच्छुक
सत्रह	सत्रह	शक्ति	शक्ति	लक्ष्मी	लक्ष्मी	विद्युत्प्रहक	विद्युत्प्रहक	दीन्हो	दीन्हो	कुरी	कुरी
पद्म	पद्म	महाराष्ट्र	महाराष्ट्र	अभक्ष्य	अभक्ष्य	महत्त्व	महत्त्व	नैप्स्यून	नैप्स्यून	कुल्हिया	कुल्हिया
विद्यार्थी	विद्यार्थी	कट्टू	कट्टू	दिक्स्थापन	दिक्स्थापन	पत्थर	पत्थर	प्राप्त	प्राप्त		
उन्नीस	उन्नीस	रूप	रूप	सख्त	सख्त	विद्युत्दर्शी	विद्युत्दर्शी	सब्जी	सब्जी		
पश्चिम	पश्चिम	हूँ	हूँ	अख्यार	अख्यार	पत्नी	पत्नी	छब्बीस	छब्बीस		
श्रीलंका	श्रीलंका	बुत्तो	बुत्तो	ज़ख्म	ज़ख्म	सपत्न्य	सपत्न्य	मार्किट	मार्किट		
विश्वविद्यालय	विश्वविद्यालय	बार्गी	बार्गी	ख्रिष्टां	ख्रिष्टां	उत्प्रवास	उत्प्रवास	दुर्ज्ञेय	दुर्ज्ञेय		
स्नान	स्नान	कुंग	कुंग	फ़ख्र	फ़ख्र	ल्याहिक	ल्याहिक	उर्दू	उर्दू		
बुद्ध	बुद्ध	हूप	हूप	अग्रास	अग्रास	विद्युतशक्ति	विद्युतशक्ति	निर्द्वन्द्व	निर्द्वन्द्व		

चक्रव्यूह से निकालती है गीता

जीवन में जब भी संकट आता है, गीता में श्रीकृष्ण द्वारा दिया गया उपदेश हमें इस चक्रव्यूह से बाहर निकालने का रास्ता दिखाता है। गीता जयंती (2 दिसंबर) पर चिंतन...

मद्रवद्गीता के अध्याय 16 के श्लोक 24 में कहा गया है - तस्माच्छास्त्रं प्रमाणं ते कार्याकार्यव्यवस्थितौ॥ अर्थात् तेरे लिए इस कर्तव्य और अकर्तव्य की व्यवस्था में शास्त्र ही प्रमाण हैं। यानी हमारे कार्य-व्यवहार को शास्त्र सही राह दिखाते हैं। श्रीमद्भगवद्गीता भी शास्त्र है, जो हमें जीवन के चक्रव्यूह से बाहर निकालती है।

आप जब भी हवाई जहाज की यात्रा करते हैं तो आपको हमेशा विमान परिचारिका विमान उड़ने से पहले कुछ महत्वपूर्ण सूचनाएं देती है। उन सूचनाओं में सबसे प्रमुख है कि विमान में कितने निकास द्वार अर्थात् एक्जिट डोर हैं। भले ही आपने जीवन में कई बार हवाई यात्राएं की होंगी, फिर भी हर बार आपको सुरक्षा नियम बताए जाते हैं। आपने शायद एक बार भी उन निकास द्वारों का प्रयोग न किया हो, परंतु आपातकाल में उनका प्रयोग करने की सलाह दी जाती है। इसी तरह जीवन की उड़ान में भी हमारे पास एक्जिट पॉलिसी अर्थात् निकास पद्धति होनी ही चाहिए।

आमतौर पर आप अपनी कार का, घर का तथा घर की वस्तुओं का भी बीमा कराते हैं, क्योंकि आप चाहते हैं कि इन वस्तुओं को कोई नुकसान न पहुंचे, परंतु अगर कुछ हो भी जाए तो आप नुकसान के उस

झटके को सहने में सक्षम हो सकें। हम बात कर रहे हैं दुख झेलने की उस क्षमता की, जो दुख के आने से पहले हमारे भीतर पैदा हो जाती है। दुख अगर बताकर आए तो सहना आसान है, परंतु यदि एकदम आ जाए तो मुश्किल आ जाती है। उदाहरण के लिए, यदि आपको मालूम हो कि कल सप्लाई का पानी नहीं आएगा, तो आप अपने आपको इसके लिए तैयार कर सकते हैं, पर अगर बिना सूचना के अचानक पानी चला जाए तो उसे झेलना काफी मुश्किल हो जाता है। आर्थिक समस्याओं के लिए तो हम अक्सर तैयार रहते हैं, शारीरिक स्तर पर भी हम कुछ हद तक स्वयं को सक्षम बना लेते हैं, पर प्रहार जब मन पर होता है तो हमारे पास कोई भी एक्जिट पॉलिसी अर्थात् उस समस्या से निकलने का द्वार नजर नहीं आता। ऐसे में हम उन लोगों की शरणागति जाते हैं जो खुद अपनी समस्याओं में उलझे हुए होते हैं। किसी शायर ने कहा है, 'थामा था उनका हाथ जो खुद ढूँढ़ते थे सहारा। इसीलिए कहा जाता है कि जब भी आप खुद को संकट की स्थिति में पाएं, तो शास्त्रों का सहारा लीजिए। जब किसी शब्द की स्पेलिंग या अर्थ पर आप अटकते हैं तो शब्दकोश की शरण में जाते हैं, फिर शब्दकोश में जो भी लिखा हो उसको आप अक्षर-अक्षर स्वीकार करते हैं।

हमारा जीवन एक तरह का महाभारत ही है और हम सब इसमें अभिमन्यु की तरह हैं, जिसे कठिनाइयों के चक्रव्यूह में आना तो आता है, पर निकलना नहीं आता। इस जीवन के चक्रव्यूह से निकलना तथा निकालना आता है भगवान कृष्ण की वाणी गीता को, परंतु आज हम गीता से बहुत दूर चले गए हैं।

ताजा खबरें, फोटो, वीडियो व लाइव स्कोर देखने के लिए क्लिक करें m.jagran.com पर

चक्रव्यूह से निकालती है गीता

जीवन में जब भी संकट आता है, गीता में श्रीकृष्ण द्वारा दिया गया उपदेश हमें इस चक्रव्यूह से बाहर निकालने का रास्ता दिखाता है। गीता जयंती (2 दिसंबर) पर चिंतन...

मद्रवद्गीता के अध्याय 16 के श्लोक 24 में कहा गया है - तस्माच्छास्त्रं प्रमाणं ते कार्याकार्यव्यवस्थितौ ॥ अर्थात् तेरे लिए इस कर्तव्य और अकर्तव्य की व्यवस्था में शास्त्र ही प्रमाण हैं। यानी हमारे कार्य-व्यवहार को शास्त्र सही राह दिखाते हैं। श्रीमद्भगवद्गीता भी शास्त्र है, जो हमें जीवन के चक्रव्यूह से बाहर निकालती है।

आप जब भी हवाई जहाज की यात्रा करते हैं तो आपको हमेशा विमान परिचारिका विमान उड़ने से पहले कुछ महत्वपूर्ण सूचनाएं देती है। उन सूचनाओं में सबसे प्रमुख है कि विमान में कितने निकास द्वार अर्थात् एक्जिट डोर हैं। भले ही आपने जीवन में कई बार हवाई यात्राएं की होंगी, फिर भी हर बार आपको सुरक्षा नियम बताए जाते हैं। आपने शायद एक बार भी उन निकास द्वारों का प्रयोग न किया हो, परंतु आपातकाल में उनका प्रयोग करने की सलाह दी जाती है। इसी तरह जीवन की उड़ान में भी हमारे पास एक्जिट पॉलिसी अर्थात् निकास पद्धति होनी ही चाहिए।

आमतौर पर आप अपनी कार का, घर का तथा घर की वस्तुओं का भी बीमा कराते हैं, क्योंकि आप चाहते हैं कि इन वस्तुओं को कोई नुकसान न पहुंचे, परंतु अगर कुछ हो भी जाए तो आप नुकसान के उस

झटके को सहने में सक्षम हो सकें। हम बात कर रहे हैं दुख झेलने की उस क्षमता की, जो दुख के आने से पहले हमारे भीतर पैदा हो जाती है। दुख अगर बताकर आए तो सहना आसान है, परंतु यदि एकदम आ जाए तो मुश्किल आ जाती है। उदाहरण के लिए, यदि आपको मालूम हो कि कल सप्लाई का पानी नहीं आएगा, तो आप अपने आपको इसके लिए तैयार कर सकते हैं, पर अगर बिना सूचना के अचानक पानी चला जाए तो उसे झेलना काफी मुश्किल हो जाता है। आर्थिक समस्याओं के लिए तो हम अक्सर तैयार रहते हैं, शारीरिक स्तर पर भी हम कुछ हद तक स्वयं को सक्षम बना लेते हैं, पर प्रहार जब मन पर होता है तो हमारे पास कोई भी एक्जिट पॉलिसी अर्थात् उस समस्या से निकलने का द्वार नजर नहीं आता। ऐसे में हम उन लोगों की शरणागति जाते हैं जो खुद अपनी समस्याओं में उलझे हुए होते हैं। किसी शायर ने कहा है, 'थामा था उनका हाथ जो खुद ढूँढ़ते थे सहारा। इसीलिए कहा जाता है कि जब भी आप खुद को संकट की स्थिति में पाएं, तो शास्त्रों का सहारा लीजिए। जब किसी शब्द की स्पेलिंग या अर्थ पर आप अटकते हैं तो शब्दकोश की शरण में जाते हैं, फिर शब्दकोश में जो भी लिखा हो उसको आप अक्षर-अक्षर स्वीकार करते हैं।

हमारा जीवन एक तरह का महाभारत ही है और हम सब इसमें अभिमन्यु की तरह हैं, जिसे कठिनाइयों के चक्रव्यूह में आना तो आता है, पर निकलना नहीं आता। इस जीवन के चक्रव्यूह से निकलना तथा निकालना आता है भगवान कृष्ण की वाणी गीता को, परंतु आज हम गीता से बहुत दूर चले गए हैं।

ताजा खबरें, फोटो, वीडियो व लाइव स्कोर देखने के लिए क्लिक करें m.jagran.com पर

गुदगुदी | शायरी | टेक ज्ञान | Hinglish News | गेम्स | गरमा गरम | Travel | Deals | Property | चुनाव

सेंसेक्स, निफ्टी ठिठके,
मिडकैप-स्मॉलकैप में उछाल

बैंक खाते से ज्यादा पैसा
निकालने पर देना होगा
टैक्स!

कंस्ट्रक्शन क्षेत्र को मिलेगा
विदेशी पूंजी का टॉनिक

रंग लाई पीएम मोदी की
मेहनत, चीन से आया तोहफा

पेट्रोल, डीजल पर उत्पाद
शुल्क बढ़ा, नहीं बढ़ेंगे दाम

मोदी के दीवाने हुए
दुनियाभर के निवेशक

बीड़ी-सिगरेट पर अब नहीं
होगी सख्ती

पर्सन ऑफ द ईयर की दौड़ में
मोदी फिर अव्वल

स्वागत के दौरान राहुल के
सामने लगे 'प्रियंका-
प्रियंका' के नारे

कंस्ट्रक्शन क्षेत्र को मिलेगा
विदेशी पूंजी का टॉनिक

उग्र में अंधेरा दूर करने के लिए
ताक पर राजनीति

कर्नाटक व गुजरात में दो
अबोध बच्चियों से दुष्कर्म

सेंसेक्स, निफ्टी ठिठके,
मिडकैप-स्मॉलकैप में
उछाल

बैंक खाते से ज्यादा पैसा
निकालने पर देना होगा
टैक्स!

कंस्ट्रक्शन क्षेत्र को मिलेगा
विदेशी पूंजी का टॉनिक

रंग लाई पीएम मोदी की
मेहनत, चीन से आया
तोहफा

पेट्रोल, डीजल पर उत्पाद
शुल्क बढ़ा, नहीं बढ़ेंगे दाम

मोदी के दीवाने हुए
दुनियाभर के निवेशक

बीड़ी-सिगरेट पर अब नहीं
होगी सख्ती

पर्सन ऑफ द ईयर की दौड़
में मोदी फिर अव्वल

स्वागत के दौरान राहुल के
सामने लगे 'प्रियंका-
प्रियंका' के नारे

कंस्ट्रक्शन क्षेत्र को मिलेगा
विदेशी पूंजी का टॉनिक

उग्र में अंधेरा दूर करने के
लिए ताक पर राजनीति

कर्नाटक व गुजरात में दो
अबोध बच्चियों से दुष्कर्म

119 देशों के बच्चों ने UAE का राष्ट्रगान गाकर बनाया रिकॉर्ड

केवल 6 सेकेंड में 'आउट ऑफ स्टॉक' हुआ जियाओमी रेडमी नोट

चीनी एपल कही जाने वाली कंपनी जियाओमी का पहला फ़ैबलेट 'जियाओमी रेडमी नोट' आज पहली बार ऑनलाइन साइट फ्लिपकार्ट पर बिक्री के लिए उतारा गया था जिसका नतीजा यह हुआ कि केवल 6 सेकेंड में सारे हेंडसेट बिक गए।

आज दोपहर ठीक 2 बजे सेल शुरू होने के 6 सेकेंड में ही पूरे 50,000 जियाओमी रेडमी नोट हेंडसेट बिक गए जिसके बाद फ्लिपकार्ट पर 'आउट ऑफ स्टॉक' का मेसेज आने लगा।

जियाओमी के इससे पहले भारत में आए डिवाइस एमआई3 और रेडमी 1एस स्मार्टफोन की तरह ही जियाओमी रेडमी नोट ने भी अपनी पहले सेल में एक रेकार्ड कायम किया है।

जियओमी रेडमी नोट की विशेषताएं

रेडमी नोट में 5.5 इंच का डिस्प्ले है जो कि 720x1280 पिक्सल का रेजोल्यूशन प्रदान करने में सक्षम है। कंपनी द्वारा डिस्प्ले को कॉर्निंग गोरिल्ला ग्लास3 की सुरक्षा भी दी गई है। इसके अलावा इसमें 1.7 गीगा हर्ट्ज मीडियाटेक ऑक्टा-कोर एमटी 6992 प्रोसेसर, माली-420 जीपीयू, 2जीबी रैम, 3,100 एमएएच की बैटरी, 8 जीबी का इंटरनल स्टोरेज व तस्वीरें लेने के लिए 13 मेगापिक्सल का रियर और 5 मेगापिक्सल का फ्रंट कैमरा है।

जियओमी रेडमी नोट भारतीय बाजार में दो वेरिएंट- डुअल सिम (2जी + 3जी) और सिंगल सिम (4जी कनेक्टिविटी) वेरिएंट में आया है जिसमें से आज केवल डुअल सिम वेरिएंट को ही फ्लिपकार्ट पर बिक्री के लिए उतारा गया था।

पढ़े - भारत आया वनप्लस वन स्मार्टफोन, जानिए फीचर्स

चीनी एपल कही जाने वाली कंपनी जियाओमी का पहला फ़ैबलेट 'जियाओमी रेडमी नोट' आज पहली बार ऑनलाइन साइट फ्लिपकार्ट पर बिक्री के लिए उतारा गया था जिसका नतीजा यह हुआ कि केवल 6 सेकेंड में सारे हेंडसेट बिक गए।

आज दोपहर ठीक 2 बजे सेल शुरू होने के 6 सेकेंड में ही पूरे 50,000 जियाओमी रेडमी नोट हेंडसेट बिक गए जिसके बाद फ्लिपकार्ट पर 'आउट ऑफ स्टॉक' का मेसेज आने लगा।

जियाओमी के इससे पहले भारत में आए डिवाइस एमआई3 और रेडमी 1एस स्मार्टफोन की तरह ही जियाओमी रेडमी नोट ने भी अपनी पहले सेल में एक रेकार्ड कायम किया है।

जियओमी रेडमी नोट की विशेषताएं

रेडमी नोट में 5.5 इंच का डिस्प्ले है जो कि 720x1280 पिक्सल का रेजोल्यूशन प्रदान करने में सक्षम है। कंपनी द्वारा डिस्प्ले को कॉर्निंग गोरिल्ला ग्लास3 की सुरक्षा भी दी गई है। इसके अलावा इसमें 1.7 गीगा हर्ट्ज मीडियाटेक ऑक्टा-कोर एमटी 6992 प्रोसेसर, माली-420 जीपीयू, 2जीबी रैम, 3,100 एमएएच की बैटरी, 8 जीबी का इंटरनल स्टोरेज व तस्वीरें लेने के लिए 13 मेगापिक्सल का रियर और 5 मेगापिक्सल का फ्रंट कैमरा है।

जियओमी रेडमी नोट भारतीय बाजार में दो वेरिएंट- डुअल सिम (2जी + 3जी) और सिंगल सिम (4जी कनेक्टिविटी) वेरिएंट में आया है जिसमें से आज केवल डुअल सिम वेरिएंट को ही फ्लिपकार्ट पर बिक्री के लिए उतारा गया था।

पढ़े - भारत आया वनप्लस वन स्मार्टफोन, जानिए फीचर्स

तीन मिररलेस कैमरे के साथ आया निकॉन

Publish Date: Mon, 01 Dec 2014 10:12 AM (IST) | Updated Date: Mon, 01 Dec 2014 11:35 AM (IST)

नई दिल्ली। निकॉन ने 1 सीरीज के कैमरे- निकॉन 1 एडब्ल्यू1, निकॉन 1 वी3 और निकॉन 1 जे4 को किट लेंसेज के साथ क्रमशः 39,950 रुपये, 43,950 रुपये और 24,950 रुपये में लांच किया है। इन तीन कैमरों में से वी3 और जे4 की घोषणा इस साल के मार्च और अप्रैल माह में की गयी थी जबकि एडब्ल्यू1 की घोषणा सितंबर, 2013 में ही कर दी गयी थी। इन तीनों कैमरे की बिक्री इस माह के अंत तक शुरू कर दी जाएगी। निकॉन के अनुसार एडब्ल्यू 1 दुनिया का पहला वाटरप्रूफ और शॉकप्रूफ मिररलेस कैमरा है। इसमें 14.2 मेगापिक्सल सीएएक्स-फार्मेट सीमॉस सेंसर और उच्च क्वालिटी के इमेज के लिए निकॉन का एक्सपीड 3ए इमेज प्रोसेसिंग इंजन लगा है। साथ ही इसमें वाइड आइएसओ रेंज [164 से 6400] लगा है जिससे किसी भी तरह की रोशनी में अच्छी तस्वीरें आ सकती हैं। यह कैमरा निकॉन के एडवांस हाइब्रिड ऑटोफोकस सिस्टम के साथ आया है, जो आपके मूविंग एक्शन को कैप्चर कर सकता है। 11-27.5मिमी एफ/3.5-5.6 किट के साथ आने वाले निकॉन 1 एडब्ल्यू1 की कीमत 39,950 रुपये रखी गयी है। दूसरा कैमरा है निकॉन वी3 जो काफी हल्के वजन का है। 1वी3 में एक्सपीड 4ए इमेज प्रोसेसर के साथ 18.4 एमपी सी-एक्स फार्मेट सीमॉस सेंसर है। इसका आइ-एसओ रेंज 160 से 12,800 है। इसमें हाइब्रिड एफ सिस्टम लगा है जिसमें 171 कंट्रास्ट-डिफेक्ट एफ प्वाइंट और 105 फेज डिटेक्ट एफ प्वाइंट है। 10-30 मिमी पीडी लेंस किट के साथ आने वाले इस कैमरे की कीमत 43,950 रुपये है। निकॉन 1 जे4 में 1 इंच का 18.4एमपी सीएक्स फार्मेट सेंसर है। निकॉन 1 जे4 में लगा हाइब्रिड एफ सिस्टम इसकी क्वालिटी में इजाफा करता है। 10-30 मिमी पीडी लेंस के साथ काले और सफेद रंग में यह कैमरा 24,950 रुपये में उपलब्ध है।

नई दिल्ली। निकॉन ने 1 सीरीज के कैमरे- निकॉन 1 एडब्ल्यू1, निकॉन 1 वी3 और निकॉन 1 जे4 को किट लेंसेज के साथ क्रमशः 39,950 रुपये, 43,950 रुपये और 24,950 रुपये में लांच किया है। इन तीन कैमरों में से वी3 और जे4 की घोषणा इस साल के मार्च और अप्रैल माह में की गयी थी जबकि एडब्ल्यू1 की घोषणा सितंबर, 2013 में ही कर दी गयी थी। इन तीनों कैमरे की बिक्री इस माह के अंत तक शुरू कर दी जाएगी। निकॉन के अनुसार एडब्ल्यू 1 दुनिया का पहला वाटरप्रूफ और शॉकप्रूफ मिररलेस कैमरा है। इसमें 14.2 मेगापिक्सल सीएएक्स-फार्मेट सीमॉस सेंसर और उच्च क्वालिटी के इमेज के लिए निकॉन का एक्सपीड 3ए इमेज प्रोसेसिंग इंजन लगा है। साथ ही इसमें वाइड आइएसओ रेंज [164 से 6400] लगा है जिससे किसी भी तरह की रोशनी में अच्छी तस्वीरें आ सकती हैं। यह कैमरा निकॉन के एडवांस हाइब्रिड ऑटोफोकस सिस्टम के साथ आया है, जो आपके मूविंग एक्शन को कैप्चर कर सकता है। 11-27.5मिमी एफ/3.5-5.6 किट के साथ आने वाले निकॉन 1 एडब्ल्यू1 की कीमत 39,950 रुपये रखी गयी है। दूसरा कैमरा है निकॉन वी3 जो काफी हल्के वजन का है। 1वी3 में एक्सपीड 4ए इमेज प्रोसेसर के साथ 18.4 एमपी सी-एक्स फार्मेट सीमॉस सेंसर है। इसका आइएसओ रेंज 160 से 12,800 है। इसमें हाइब्रिड एफ सिस्टम लगा है जिसमें 171 कंट्रास्ट-डिफेक्ट एफ प्वाइंट और 105 फेज डिटेक्ट एफ प्वाइंट है। 10-30 मिमी पीडी लेंस किट के साथ आने वाले इस कैमरे की कीमत 43,950 रुपये है। निकॉन 1 जे4 में 1 इंच का 18.4एमपी सीएक्स फार्मेट सेंसर है। निकॉन 1 जे4 में लगा हाइब्रिड एफ सिस्टम इसकी क्वालिटी में इजाफा करता है। 10-30 मिमी पीडी लेंस के साथ काले और सफेद रंग में यह कैमरा 24,950 रुपये में उपलब्ध है।

बेंगलुरु। आइपीएल-7 फाइनल में जीत के बाद इस टीम के सभी खिलाड़ी जश्न में डूबे दिखे, आखिर ये उनका दूसरा खिताब जो है वहीं अगर टीम के सबसे सफल गेंदबाज व टूर्नामेंट में 21 विकेट लेकर इस मामले में दूसरे नंबर पर रहने वाले कैरेबियाई स्पिनर सुनील नरेन की मानें तो इस बार की जीत, 2012 की खिताबी जीत से ज्यादा संतोषजनक है। नरेन ने कहा, 'ये साल और बेहतर था क्योंकि हमने 200 के लक्ष्य को हासिल किया जो कि आसान काम नहीं है। लड़कों ने इस जीत के लिए कड़ी मेहनत की थी और वे इस लम्हे के हकदार हैं। इस साल हमारी शुरुआत अच्छी नहीं रही लेकिन हमने लगातार नौ जीत हासिल करके टूर्नामेंट का अंत किया जो अद्भुत है। एक बार खिताब जीतना शानदार होता है लेकिन दो बार इसको अपने नाम करना एक अद्भुत

बेंगलुरु। आइपीएल-7 फाइनल में जीत के बाद इस टीम के सभी खिलाड़ी जश्न में डूबे दिखे, आखिर ये उनका दूसरा खिताब जो है वहीं अगर टीम के सबसे सफल गेंदबाज व टूर्नामेंट में 21 विकेट लेकर इस मामले में दूसरे नंबर पर रहने वाले कैरेबियाई स्पिनर सुनील नरेन की मानें तो इस बार की जीत, 2012 की खिताबी जीत से ज्यादा संतोषजनक है। नरेन ने कहा, 'ये साल और बेहतर था क्योंकि हमने 200 के लक्ष्य को हासिल किया जो कि आसान काम नहीं है। लड़कों ने इस जीत के लिए कड़ी मेहनत की थी और वे इस लम्हे के हकदार हैं। इस साल हमारी शुरुआत अच्छी नहीं रही लेकिन हमने लगातार नौ जीत हासिल करके टूर्नामेंट का अंत किया जो अद्भुत है। एक बार खिताब जीतना शानदार होता है लेकिन दो बार इसको अपने नाम करना एक अद्भुत सफलता है और शानदार

फोटो में देखें, क्या हुआ जब ग्रांड फैशन इवेंट में Bollywood Divas ने रैंप पर उतरकर बिखेरे जलवे

गौरव गाथा

हिन्दी साहित्य को अपने अस्तित्व से गौरवान्वित करने वाली विशेष कहानियों के इस संग्रह में प्रस्तुत है— सैय्यद इंशा अल्ला खाँ की 'रानी केतकी की कहानी'। यह संभवतः खड़ी बोली की पहली कहानी है और इसका रचनाकाल १८०३ ईस्वी के आसपास माना जाता है।

यह वह कहानी है कि जिसमें हिंदी छुट।

और न किसी बोली का मेल है न पुट॥

सिर झुकाकर नाक रगड़ता हूँ उस अपने बनानेवाले के सामने जिसने हम सब को बनाया और बात में वह कर दिखाया कि जिसका भेद किसी ने न पाया। आतियाँ जातियाँ जो साँसें हैं, उसके बिन ध्यान यह सब फाँसे हैं। यह कल का पुतला जो अपने उस खेलाड़ी की सुध रखे तो खटाई में क्यों पड़े और कड़वा कसैला क्यों हो। उस फल की मिठाई चक्खे जो बड़े से बड़े अगलों ने चक्खी है।

देखने को दो आँखें दीं और सुनने के दो कान।

नाक भी सब में ऊँची कर दी मरतों को जी दान॥

मिट्टी के बासन को इतनी सकत कहाँ जो अपने कुम्हार के करतब कुछ ताड़ सके। सच है, जो बनाया हुआ हो, सो अपने बनानेवालो को क्या सराहे और क्या कहे। यों जिसका जी चाहे, पड़ा बके। सिर से लगा पाँव तक जितने रोंगटे हैं, जो सबके सब बोल उठें और सराहा करें और उतने बरसों उसी ध्यान में रहें जितनी सारी नदियों में रेत और फूल फलियाँ खेत में हैं, तो भी कुछ न हो सके, कराहा करें। इस सिर झुकाने के साथ ही दिन रात जपता हूँ उस अपने दाता के भेजे हुए प्यारे को जिसके लिये यों कहा है -

जो तू न होता तो मैं कुछ न बनाता; और उसका चचेरा भाई जिसका ब्याह उसके घर हुआ, उसकी सुरत मुझे लगी रहती है। मैं फूला अपने आप में नहीं समाता, और जितने उनके लड़के वाले हैं, उन्हीं को मेरे जी में चाह है। और कोई कुछ हो, मुझे नहीं भाता। मुझको उम्र घराने छूट किसी चोर ठग से क्या पड़ी! जीते और मरते आसरा उन्हीं सभों का और उनके घराने का रखता हूँ तीसों घड़ी।

डौल डाल एक अनोखी बात का

एक दिन बैठे-बैठे यह बात अपने ध्यान में चढ़ी कि कोई कहानी ऐसी कहिए कि जिसमें हिंदवी छुट और किसी बोली का पुट न मिले, तब जाके मेरा जी फूल की कली के रूप में खिले। बाहर की बोली और गँवारी कुछ उसके बीच में न हो। अपने मिलने वालों में से एक कोई पढ़े-लिखे, पुराने-धुराने, डाँग, बूढ़े धाग यह खटराग लाए। सिर हिलाकर, मुँह थुथाकर, नाक भी चढ़ाकर, आँखें फिराकर लगे कहने - यह बात होते दिखाई नहीं देती। हिंदवीपन भी न निकले और भाखापन भी न हो। बस जैसे भले लोग अच्छे आपस में बोलते चालते हैं, ज्यों का त्यों वही सब डौल रहे और छाँह किसी की न हो, यह नही होने का। मैंने उनकी ठंडी साँस का टहोका खाकर झुँझलाकर कहा - मैं कुछ ऐसा बड़बोला नहीं जो राई को परबत कर दिखाऊँ और झूठ सच बोलकर

गौरव गाथा

हिन्दी साहित्य को अपने अस्तित्व से गौरवान्वित करने वाली विशेष कहानियों के इस संग्रह में प्रस्तुत है— सैय्यद इंशा अल्ला खाँ की 'रानी केतकी की कहानी'। यह संभवतः खड़ी बोली की पहली कहानी है और इसका रचनाकाल १८०३ ईस्वी के आसपास माना जाता है।

यह वह कहानी है कि जिसमें हिंदी छुट।

और न किसी बोली का मेल है न पुट ॥

सिर झुकाकर नाक रगड़ता हूँ उस अपने बनानेवाले के सामने जिसने हम सब को बनाया और बात में वह कर दिखाया कि जिसका भेद किसी ने न पाया। आतियाँ जातियाँ जो साँसें हैं, उसके बिन ध्यान यह सब फाँसे हैं। यह कल का पुतला जो अपने उस खेलाड़ी की सुध रखे तो खटाई में क्यों पड़े और कड़वा कसैला क्यों हो। उस फल की मिठाई चक्खे जो बड़े से बड़े अगलों ने चक्खी है।

देखने को दो आँखें दीं और सुनने के दो कान।

नाक भी सब में ऊँची कर दी मरतों को जी दान ॥

मिट्टी के बासन को इतनी सकत कहाँ जो अपने कुम्हार के करतब कुछ ताड़ सके। सच है, जो बनाया हुआ हो, सो अपने बनानेवालो को क्या सराहे और क्या कहे। यों जिसका जी चाहे, पड़ा बके। सिर से लगा पाँव तक जितने रोंगटे हैं, जो सबके सब बोल उठें और सराहा करें और उतने बरसों उसी ध्यान में रहें जितनी सारी नदियों में रेत और फूल फलियाँ खेत में हैं, तो भी कुछ न हो सके, कराहा करें। इस सिर झुकाने के साथ ही दिन रात जपता हूँ उस अपने दाता के भेजे हुए प्यारे को जिसके लिये यों कहा है -

जो तू न होता तो मैं कुछ न बनाता; और उसका चचेरा भाई जिसका ब्याह उसके घर हुआ, उसकी सुरत मुझे लगी रहती है। मैं फूला अपने आप में नहीं समाता, और जितने उनके लड़के वाले हैं, उन्हीं को मेरे जी में चाह है। और कोई कुछ हो, मुझे नहीं भाता। मुझको उम्र घराने छूट किसी चोर ठग से क्या पड़ी! जीते और मरते आसरा उन्हीं सभों का और उनके घराने का रखता हूँ तीसों घड़ी।

डौल डाल एक अनोखी बात का

एक दिन बैठे-बैठे यह बात अपने ध्यान में चढ़ी कि कोई कहानी ऐसी कहिए कि जिसमें हिंदवी छुट और किसी बोली का पुट न मिले, तब जाके मेरा जी फूल की कली के रूप में खिले। बाहर की बोली और गँवारी कुछ उसके बीच में न हो। अपने मिलने वालों में से एक कोई पढ़े-लिखे, पुराने-धुराने, डाँग, बूढ़े धाग यह खटराग लाए। सिर हिलाकर, मुँह थुथाकर, नाक भी चढ़ाकर, आँखें फिराकर लगे कहने - यह बात होते दिखाई नहीं देती। हिंदवीपन भी न निकले और भाखापन भी न हो। बस जैसे भले लोग अच्छे आपस में बोलते चालते हैं, ज्यों का त्यों वही सब डौल रहे और छाँह किसी की न हो, यह नही होने का। मैंने उनकी ठंडी साँस का टहोका खाकर झुँझलाकर कहा - मैं कुछ ऐसा बड़बोला नहीं जो राई को

उँगलियाँ नचाऊँ, और बे-सिर बे-ठिकाने की उलझी-सुलझी बातें सुनाऊँ, जो मुझ से न हो सकता तो यह बात मुँह से क्यों निकालता? जिस ढब से होता, इस बखेड़े को टालता।

इस कहानी का कहनेवाला यहाँ आपको जताता है और जैसा कुछ उसे लोग पुकारते हैं, कह सुनाता है। दहना हाथ मुँह पर फेरकर आपको जताता हूँ, जो मेरे दाता ने चाहा तो यह ताव-भाव, राव-चाव और कूद-फाँद, लपट झपट दिखाऊँ जो देखते ही आप के ध्यान का घोड़ा, जो बिजली से भी बहुत चंचल अल्हड़पन में है, हिरन के रूप में अपनी चौकड़ी भूल जाय।

टुक घोड़े पर चढ़ के अपने आता हूँ मैं।

करतब जो कुछ है, कर दिखता हूँ मैं॥

उस चाहनेवाले ने जो चाहा तो अभी।

कहता जो कुछ हूँ, कर दिखाता हूँ मैं॥

अब आप कान रख के, आँखें मिला के, सन्मुख होके टुक इधर देखिए, किस ढंग से बढ़ चलता हूँ और अपने फूल के पंखड़ी जैसे होठों से किस किस रूप के फूल उगलता हूँ।

कहानी के जीवन का उभार और बोलचाल की दुलहिन का सिंगार

किसी देश में किसी राजा के घर एक बेटा था। उसे उसके माँ-बाप और सब घर के लोग कुँवर उदैभान करके पुकारते थे। सचमुच उसके जीवन की जोत में सूरज की एक स्रोत आ मिली थी। उसका अच्छापन और भला लगना कुछ ऐसा न था जो किसी के लिखने और कहने में आ सके। पंद्रह बरस भरके उसने सोलहवें में पाँव रक्खा था। कुछ यों ही सी मसँ भीनती चली थीं। पर किसी बात के सोच का घर-घाट न पाया था और चाह की नदी का पाट उसने देखा न था। एक दिन हरियाली देखने को अपने घोड़े पर चढ़के अठखेल और अल्हड़पन के साथ देखता भालता चला जाता था। इतने में जो एक हिरनी उसके सामने आई, तो उसका जी लोट पोट हुआ। उस हिरनी के पीछे सब छोड़ छाड़कर घोड़ा फेंका। कोई घोड़ा उसको पा सकता था? जब सूरज छिप गया और हिरनी आँखों से ओझल हुई, तब तो कुँवर उदैभान भूखा, प्यासा, उनींदा, जँभाइयाँ, अँगड़ाइयाँ लेता, हक्का बक्का होके लगा आसरा ढूँढ़ने। इतने में कुछ एक अमराइयाँ देख पड़ी, तो उधर चल निकला; तो देखता है वो चालीस-पचास रंडियाँ एक से एक जोबन में अगली झूला डाले पड़ी झूल रही है और सावन गातियाँ हैं।

ज्यों ही उन्होंने उसको देखा - तू कौन? तू कौन? की चिंघाड़ सी पड़ गई। उन सभों में एक के साथ उसकी आँख लग गई।

कोई कहती थी यह उचक्का है।

कोई कहती थी एक पक्का है।

वही झूलेवाली लाल जोड़ा पहने हुए, जिसको सब रानी केतकी कहते थीं, उसके भी जी में उसकी चाह ने घर किया। पर कहने-सुनने को बहुत सी नाँह-नूह की और कहा -

परबत कर दिखाऊँ और झूठ सच बोलकर उँगलियाँ नचाऊँ, और बे-सिर बे-ठिकाने की उलझी-सुलझी बातें सुनाऊँ, जो मुझ से न हो सकता तो यह बात मुँह से क्यों निकालता? जिस ढब से होता, इस बखेड़े को टालता।

इस कहानी का कहनेवाला यहाँ आपको जताता है और जैसा कुछ उसे लोग पुकारते हैं, कह सुनाता है। दहना हाथ मुँह पर फेरकर आपको जताता हूँ, जो मेरे दाता ने चाहा तो यह ताव-भाव, राव-चाव और कूद-फाँद, लपट झपट दिखाऊँ जो देखते ही आप के ध्यान का घोड़ा, जो बिजली से भी बहुत चंचल अल्हड़पन में है, हिरन के रूप में अपनी चौकड़ी भूल जाय।

टुक घोड़े पर चढ़ के अपने आता हूँ मैं।

करतब जो कुछ है, कर दिखता हूँ मैं॥

उस चाहनेवाले ने जो चाहा तो अभी।

कहता जो कुछ हूँ, कर दिखाता हूँ मैं॥

अब आप कान रख के, आँखें मिला के, सन्मुख होके टुक इधर देखिए, किस ढंग से बढ़ चलता हूँ और अपने फूल के पंखड़ी जैसे होठों से किस किस रूप के फूल उगलता हूँ।

कहानी के जीवन का उभार और बोलचाल की दुलहिन का सिंगार

किसी देश में किसी राजा के घर एक बेटा था। उसे उसके माँ-बाप और सब घर के लोग कुँवर उदैभान करके पुकारते थे। सचमुच उसके जीवन की जोत में सूरज की एक स्रोत आ मिली थी। उसका अच्छापन और भला लगना कुछ ऐसा न था जो किसी के लिखने और कहने में आ सके। पंद्रह बरस भरके उसने सोलहवें में पाँव रक्खा था। कुछ यों ही सी मसँ भीनती चली थीं। पर किसी बात के सोच का घर-घाट न पाया था और चाह की नदी का पाट उसने देखा न था। एक दिन हरियाली देखने को अपने घोड़े पर चढ़के अठखेल और अल्हड़पन के साथ देखता भालता चला जाता था। इतने में जो एक हिरनी उसके सामने आई, तो उसका जी लोट पोट हुआ। उस हिरनी के पीछे सब छोड़ छाड़कर घोड़ा फेंका। कोई घोड़ा उसको पा सकता था? जब सूरज छिप गया और हिरनी आँखों से ओझल हुई, तब तो कुँवर उदैभान भूखा, प्यासा, उनींदा, जँभाइयाँ, अँगड़ाइयाँ लेता, हक्का बक्का होके लगा आसरा ढूँढ़ने। इतने में कुछ एक अमराइयाँ देख पड़ी, तो उधर चल निकला; तो देखता है वो चालीस-पचास रंडियाँ एक से एक जोबन में अगली झूला डाले पड़ी झूल रही है और सावन गातियाँ हैं।

ज्यों ही उन्होंने उसको देखा - तू कौन? तू कौन? की चिंघाड़ सी पड़ गई। उन सभों में एक के साथ उसकी आँख लग गई।

कोई कहती थी यह उचक्का है।

कोई कहती थी एक पक्का है।

वही झूलेवाली लाल जोड़ा पहने हुए, जिसको सब रानी केतकी कहते थीं, उसके भी जी में उसकी चाह ने घर किया। पर कहने-सुनने को बहुत सी नाँह-नूह की और कहा -

pg 7/18

पपरुपवपवरुवव
पपरूपवपवरूवव
पपदुपवपवदुवव
पपदूपवपवदूवव
पपदृपवपवदृवव

Vowel sign spacing

पपपंपपपंपपकंपप
पपपॅपपपॅपकॅपप
पपपँपपपँपकँपप
पपपैपपपैपकैपप
पपपेपपपेपकेपप
पपपैपपपैपकैपप
पपपेपपपेपकेपप
पपपैपपपैपकैपप
पपपेपपपेपकेपप
पपपैपपपैपकैपप
पपपेपपपेपकेपप
पपपैपपपैपकैपप
पपपेपपपेपकेपप
पपपैपपपैपकैपप

पपपापपरापपकापप
पपपिपपरिपपकिपप
पपपीपपरीपपकीपप
पपपीपपरीपपकीपप
पपपापपरापपकापप
पपपापपरापपकापप
पपपोपपरोपपकोपप
पपपोपपरोपपकोपप
पपपोपपरोपपकोपप
पपपोपपरोपपकोपप
पपपोपपरोपपकोपप
पपपोपपरापपकापप

पपपौपपरौपपकौपप
पपपौपपरौपपकौपप
पपपौपपरापपकापप

पपपुपपरुपपकुपप
पपपूपपरूपपकूपप
पपपृपपरृपपकृपप
पपपृपपरृपपकृपप
पपपूपपरूपपकूपप
पपपूपपरूपपकूपप

पपपपपपपपकपप
पपपपपपपपकपप
पपपपपपपपकपप
पपपपपपपपकपप
पपपपपपपपकपप
पपपपपपपपकपप
पपपपपपपपकपप
पपपपपपपपकपप
पपपपपपपपकपप
पपपपपपपपकपप
पपपपपपपपकपप
पपपपपपपपकपप

पपपऽपवपववऽवव
पप?पवपव?वव
पपपःपवपववःवव

Numeral spacing

००००१०१०११
००१०१०११११
००२०१०१२११
००३०१०१३११
००४०१०१४११
००५०१०१५११
००६०१०१६११
००७०१०१७११
००८०१०१८११
००९०१०१९११

Letter-punct spacing

पपक, पवक.
पपख, पवख.
पपग, पवग.
पपघ, पवघ.
पपङ, पवङ.
पपच, पवच.
पपछ, पवछ.
पपज, पवज.
पपझ, पवझ.
पपञ, पवञ.
पपट, पवट.
पपठ, पवठ.
पपड, पवड.
पपढ, पवढ.
पपण, पवण.
पपत, पवत.
पपथ, पवथ.
पपद, पवद.
पपध, पवध.
पपन, पवन.
पपप, पवप.

पपफ, पवफ.
पपब, पवब.
पपभ, पवभ.
पपम, पवम.
पपय, पवय.
पपर, पवर.
पपल, पवल.
पपळ, पवळ.
पपव, पवव.
पपश, पवश.
पपष, पवष.
पपस, पवस.
पपह, पवह.
पपक्र, पवक्र.
पपख, पवख.
पपग, पवग.
पपज, पवज.
पपड़, पवड़.
पपढ़, पवढ़.
पपफ़, पवफ़.
पपय़, पवय़.
पपक्ष, पवक्ष.
पपज्ञ, पवज्ञ.

पपअ, पवअ.
पपओ, पवओ.
पपऑ, पवऑ.
पपइ, पवइ.
पपई, पवई.
पपउ, पवउ.
पपऊ, पवऊ.
पपए, पवए.
पपऐ, पवऐ.
पपऐ, पवऐ.
पपऐ, पवऐ.

पपआ, पवआ.
पपओ, पवओ.
पपऔ, पवऔ.
पपऋ, पवऋ.
पपऌ, पवऌ.
पपलृ, पवलृ.
पपलृ, पवलृ.

पपङ्ग, पवङ्ग.
पपछ्, पवछ्.
पपट्र, पवट्र.
पपट्र, पवट्र.
पपङ्ग, पवङ्ग.
पपद्र, पवद्र.
पपद्र, पवद्र.
पपद्र, पवद्र.
पपद्र, पवद्र.
पपद्र, पवद्र.
पपद्र, पवद्र.
पपद्र, पवद्र.
पपद्र, पवद्र.
पपद्र, पवद्र.
पपद्र, पवद्र.

पपक्त, पवक्त.
पपरु, पवरु.
पपरु, पवरु.
पपट्ट, पवट्ट.
पपट्ट, पवट्ट.
पपट्ट, पवट्ट.
पपट्ट, पवट्ट.
पपट्ट, पवट्ट.
पपट्ट, पवट्ट.
पपट्ट, पवट्ट.
पपट्ट, पवट्ट.
पपट्ट, पवट्ट.
पपट्ट, पवट्ट.
पपट्ट, पवट्ट.
पपट्ट, पवट्ट.

पपद्, पवद्.
पपष्ट, पवष्ट.
पपम्भ, पवम्भ.
पपष्ठ, पवष्ठ.
पपल्ज, पवलज्.
पपह्, पवह्.
पपह्, पवह्.
पपह्, पवह्.
पपह्, पवह्.

पपहु, पवहु.
पपहु, पवहु.
पपहु, पवहु.
पपहु, पवहु.
पपहु, पवहु.
पपहु, पवहु.
पपहु, पवहु.
पपहु, पवहु.
पपहु, पवहु.
पपहु, पवहु.
पपहु, पवहु.
पपहु, पवहु.
पपहु, पवहु.
पपहु, पवहु.
पपहु, पवहु.

-
पपक; पवक:
पपख; पवख:
पपग; पवग:
पपघ; पवघ:
पपङ; पवङ:
पपच; पवच:
पपछ; पवछ:
पपज; पवज:
पपझ; पवझ:
पपञ; पवञ:
पपट; पवट:
पपठ; पवठ:

पपड; पवडः	पपअँ; पवअँः	पपडू; पवडूः	पपघ। पवघः	पपड़। पवड़ः	पपह। पवहः	पपरू। पवरूः
पपढ; पवढः	पपइ; पवइः	पपडू; पवडूः	पपङ। पवङः	पपढ़। पवढ़ः	पपळ। पवळः	पपटु। पवटुः
पपण; पवणः	पपई; पवईः	पपडू; पवडूः	पपच। पवचः	पपफ़। पवफ़ः		पपटू। पवटूः
पपत; पवतः	पपउ; पवउः	पपद्ध; पवद्धः	पपछ। पवछः	पपय। पवयः	पपक्त। पवक्तः	पपटृ। पवटृः
पपथ; पवथः	पपऊ; पवऊः	पपद्ग; पवद्गः	पपज। पवजः	पपक्ष। पवक्षः	पपरु। पवरुः	
पपद; पवदः	पपए; पवएः	पपद्ध; पवद्धः	पपझ। पवझः	पपज्ञ। पवज्ञः	पपरू। पवरूः	-
पपध; पवधः	पपऐ; पवऐः	पपद्ध; पवद्धः	पपञ। पवञः		पपटृ। पवटृः	पपक! पवक?
पपन; पवनः	पपऐँ; पवऐँः	पपद्ध; पवद्धः	पपट। पवटः	पपअ। पवअः	पपटृ। पवटृः	पपख! पवख?
पपप; पवपः	पपऐँ; पवऐँः	पपद्ध; पवद्धः	पपठ। पवठः	पपअँ। पवअँः	पपटृ। पवटृः	पपग! पवग?
पपफ; पवफः	पपआ; पवआः	पपह; पवहः	पपड। पवडः	पपअँ। पवअँः	पपडू। पवडूः	पपघ। पवघ?
पपब; पवबः	पपओ; पवओः	पपष्ट; पवष्टः	पपढ। पवढः	पपइ। पवइः	पपडू। पवडूः	पपङ। पवङ?
पपभ; पवभः	पपऔ; पवऔः	पपम्भ; पवम्भः	पपण। पवणः	पपई। पवईः	पपडू। पवडूः	पपच। पवच?
पपम; पवमः	पपऋ; पवऋः	पपष्ठ; पवष्ठः	पपत। पवतः	पपउ। पवउः	पपद्ध। पवद्धः	पपछ। पवछ?
पपय; पवयः	पपऋ; पवऋः	पपलज; पवलजः	पपथ। पवथः	पपऊ। पवऊः	पपद्ग। पवद्गः	पपज। पवज?
पपर; पवरः	पपल; पवलः	पपल्ल; पवल्लः	पपद। पवदः	पपए। पवएः	पपद्ध। पवद्धः	पपझ। पवझ?
पपल; पवलः	पपलृ; पवलृः	पपल्ल; पवल्लः	पपध। पवधः	पपऐ। पवऐः	पपद्ध। पवद्धः	पपञ। पवञ?
पपळ; पवळः		पपल्ल; पवल्लः	पपन। पवनः	पपऐँ। पवऐँः	पपद्ध। पवद्धः	पपट। पवट?
पपव; पववः		पपल्ल; पवल्लः	पपप। पवपः	पपऐँ। पवऐँः	पपद्ध। पवद्धः	पपठ। पवठ?
पपश; पवशः	पपइ; पवइः		पपफ। पवफः	पपआ। पवआः	पपह। पवहः	पपड। पवड?
पपष; पवषः	पपछ; पवछः	पपहु; पवहुः	पपब। पवबः	पपओ। पवओः	पपष्ट। पवष्टः	पपढ। पवढ?
पपस; पवसः	पपट्र; पवट्रः	पपहू; पवहूः	पपभ। पवभः	पपऔ। पवऔः	पपम्भ। पवम्भः	पपण। पवण?
पपह; पवहः	पपट्र; पवट्रः	पपह; पवहः	पपम। पवमः	पपऋ। पवऋः	पपष्ठ। पवष्ठः	पपत। पवत?
पपक्र; पवक्रः	पपइ; पवइः	पपह; पवहः	पपम। पवमः	पपऋ। पवऋः	पपलज। पवलजः	पपथ। पवथ?
पपख; पवखः	पपद्ध; पवद्धः	पपहु; पवहुः	पपय। पवयः	पपलृ। पवलृः	पपल्ल। पवल्लः	पपद। पवद?
पपग; पवगः	पपद्ग; पवद्गः	पपहू; पवहूः	पपर। पवरः	पपलृ। पवलृः	पपल्ल। पवल्लः	पपध। पवध?
पपज; पवजः	पपद्ग; पवद्गः	पपहू; पवहूः	पपल। पवलः		पपल्ल। पवल्लः	पपन। पवन?
पपङ; पवङः	पपद्ग; पवद्गः	पपहू; पवहूः	पपळ। पवळः		पपल्ल। पवल्लः	पपप! पवप?
पपढ; पवढः	पपह; पवहः	पपरू; पवरूः	पपव। पववः		पपल्ल। पवल्लः	पपफ! पवफ?
पपफ़; पवफ़ः	पपळ; पवळः	पपडू; पवडूः	पपश। पवशः	पपइ। पवइः		पपब! पवब?
पपय; पवयः		पपदू; पवदूः	पपष। पवषः	पपछ। पवछः	पपहु। पवहुः	पपभ! पवभ?
पपक्ष; पवक्षः	पपक्त; पवक्तः	पपदृ; पवदृः	पपस। पवसः	पपट्र। पवट्रः	पपहू। पवहूः	पपम! पवम?
पपज्ञ; पवज्ञः	पपरु; पवरुः		पपह। पवहः	पपड्र। पवड्रः	पपहू। पवहूः	पपय! पवय?
	पपरू; पवरूः	-	पपक्र। पवक्रः	पपद्ध। पवद्धः	पपहु। पवहुः	पपर! पवर?
पपअ; पवअः	पपटृ; पवटृः	पपक। पवकः	पपख। पवखः	पपट्र। पवट्रः	पपहु। पवहुः	पपल! पवल?
पपअँ; पवअँः	पपटृ; पवटृः	पपख। पवखः	पपग। पवगः	पपद्र। पवद्रः	पपहु। पवहुः	पपळ। पवळ?
		पपग। पवगः	पपज। पवजः	पपरु। पवरुः	पपरु। पवरुः	

पपव! पवव?	पपङ्ग! पवङ्ग?	पपहु! पवहु?	पपफ-फपव	पपआ-आपव	पपद्-दपव	"डपवपड"
पपश! पवश?	पपछ! पवछ?	पपहू! पवहू?	पपब-बपव	पपओ-ओपव	पपष्ट-ष्टपव	"ढपवपढ"
पपष! पवष?	पपट्र! पवट्र?	पपहू! पवहू?	पपभ-भपव	पपऔ-औपव	पपभ-भपव	"णपवपण"
पपस! पवस?	पपत्र! पवत्र?	पपहू! पवहू?	पपम-मपव	पपक्र-क्रपव	पपष्ठ-ष्ठपव	"तपवपत"
पपह! पवह?	पपङ्ग! पवङ्ग?	पपहू! पवहू?	पपय-यपव	पपक्र-क्रपव	पपल्ज-ल्जपव	"थपवपथ"
पपक्र! पवक्र?	पपद्र! पवद्र?	पपहु! पवहु?	पपर-रपव	पपलृ-लृपव	पपल्ल-ल्लपव	"दपवपद"
पपख! पवख?	पपद्र! पवद्र?	पपहू! पवहू?	पपल-लपव	पपलृ-लृपव	पपल्ल-ल्लपव	"धपवपध"
पपग! पवग?	पपरु! पवरु?	पपरु! पवरु?	पपळ-ळपव		पपल्ल-ल्लपव	"नपवपन"
पपज! पवज?	पपहू! पवहू?	पपरु! पवरु?	पपव-वपव		पपल्ल-ल्लपव	"पपवपप"
पपङ्ग! पवङ्ग?	पपळ! पवळ?	पपदु! पवदु?	पपश-शपव	पपङ्ग-ङ्गपव		"फपवपफ"
पपढ! पवढ?		पपदू! पवदू?	पपष-षपव	पपछ-छपव	पपहु-हुपव	"बपवपब"
पपफ! पवफ?	पपक्त! पवक्त?	पपदू! पवदू?	पपस-सपव	पपट्र-ट्रपव	पपहू-हूपव	"भपवपभ"
पपय! पवय?	पपरु! पवरु?	पपदू! पवदू?	पपह-हपव	पपट्र-ट्रपव	पपहू-हूपव	"मपवपम"
पपक्ष! पवक्ष?	पपरु! पवरु?	-	पपक्र-क्रपव	पपङ्ग-ङ्गपव	पपहू-हूपव	"यपवपय"
पपज्ञ! पवज्ञ?	पपट्र! पवट्र?	पपक-कपव	पपख-खपव	पपद्र-द्रपव	पपहु-हुपव	"रपवपर"
	पपट्र! पवट्र?	पपख-खपव	पपग-गपव	पपद्र-द्रपव	पपहू-हूपव	"लपवपल"
पपअ! पवअ?	पपठ! पवठ?	पपग-गपव	पपज-जपव	पपरु-रुपव	पपरु-रुपव	"ळपवपळ"
पपओ! पवओ?	पपङ्ग! पवङ्ग?	पपघ-घपव	पपङ्ग-ङ्गपव	पपह-हपव	पपरु-रुपव	"वपवपव"
पपओ! पवओ?	पपङ्ग! पवङ्ग?	पपङ-ङपव	पपढ-ढपव	पपळ-ळपव	पपदु-दुपव	"शपवपश"
पपअ! पवअ?	पपङ्ग! पवङ्ग?	पपच-चपव	पपफ-फपव		पपदू-दूपव	"षपवपष"
पपइ! पवइ?	पपङ्ग! पवङ्ग?	पपछ-छपव	पपय-यपव	पपक्त-क्तपव	पपदू-दूपव	"सपवपस"
पपई! पवई?	पपङ्ग! पवङ्ग?	पपज-जपव	पपक्ष-क्षपव	पपरु-रुपव		"हपवपह"
पपउ! पवउ?	पपङ्ग! पवङ्ग?	पपझ-झपव	पपज्ञ-ज्ञपव	पपरु-रुपव	-	"क्रपवपक्र"
पपऊ! पवऊ?	पपङ्ग! पवङ्ग?	पपज-जपव		पपट्र-ट्रपव	"कपवपक"	"खपवपख"
पपए! पवए?	पपङ्ग! पवङ्ग?	पपट-टपव	पपअ-अपव	पपट्र-ट्रपव	"खपवपख"	"गपवपग"
पपऐ! पवऐ?	पपङ्ग! पवङ्ग?	पपठ-ठपव	पपओ-ओपव	पपठ-ठपव	"गपवपग"	"जपवपज"
पपऐ! पवऐ?	पपङ्ग! पवङ्ग?	पपड-डपव	पपओ-ओपव	पपङ्ग-ङ्गपव	"घपवपघ"	"ङपवपङ्ग"
पपआ! पवआ?	पपष्ट! पवष्ट?	पपढ-ढपव	पपङ्ग-ङ्गपव	पपङ्ग-ङ्गपव	"ङपवपङ्ग"	"ढपवपढ"
पपओ! पवओ?	पपभ-भपव	पपण-णपव	पपई-ईपव	पपङ्ग-ङ्गपव	"चपवपच"	"फपवपफ"
पपओ! पवओ?	पपष्ठ! पवष्ठ?	पपत-तपव	पपउ-उपव	पपङ्ग-ङ्गपव	"छपवपछ"	"यपवपय"
पपक्र! पवक्र?	पपल्ज! पवल्लज?	पपथ-थपव	पपऊ-ऊपव	पपङ्ग-ङ्गपव	"जपवपज"	"क्षपवपक्ष"
पपक्र! पवक्र?	पपल्ल! पवल्ल?	पपद-दपव	पपए-एपव	पपङ्ग-ङ्गपव	"झपवपझ"	"ज्ञपवपज्ञ"
पपलृ! पवल्ल?	पपल्ल! पवल्ल?	पपध-धपव	पपऐ-ऐपव	पपङ्ग-ङ्गपव	"जपवपज"	
पपलृ! पवल्ल?	पपल्ल! पवल्ल?	पपन-नपव	पपऐ-ऐपव	पपङ्ग-ङ्गपव	"टपवपट"	"अपवपअ"
	पपल्ल! पवल्ल?	पपप-पपव	पपऐ-ऐपव	पपङ्ग-ङ्गपव	"ठपवपठ"	"ओपवपओ"

अपवर्णक	संयोजक	Num-punct spacing	li Vowel sign - base	पपहपपहिंपपहिंपप
"अपवपअ"	"हुपवपहु"			पपक्षिपपक्षिंपपक्षिंपप
"इपवपइ"	"हुपवपहु"	पवप २१०१ वपव	पपकिपपकिंपपकिंपप	पपझिपपझिंपपझिंपप
"ईपवपई"	"द्वपवपद्व"	पवप २२०१ वपव	पपखिपपखिंपपखिंपप	
"उपवपउ"	"द्रपवपद्र"	पवप २३०१ वपव	पपगिपपगिंपपगिंपप	
"ऊपवपऊ"	"द्वपवपद्व"	पवप २४०१ वपव	पपघिपपघिंपपघिंपप	
"एपवपए"	"द्वपवपद्व"	पवप २५०१ वपव	पपङिपपङिंपपङिंपप	
"ऐपवपऐ"	"द्वपवपद्व"	पवप २६०१ वपव	पपचिपपचिंपपचिंपप	
"ऎपवपऎवव"	"द्वपवपद्व"	पवप २७०१ वपव	पपछिपपछिंपपछिंपप	
"ऐपवपऐ"	"द्वपवपद्व"	पवप २८०१ वपव	पपजिपपजिंपपजिंपप	
"आपवपआ"	"ष्टपवपष्ट"	पवप २९०१ वपव	पपझिपपझिंपपझिंपप	
"ओपवपओ"	"भपवपभ"		पपञिपपञिंपपञिंपप	
"औपवपऔ"	"षपवपष"		पपटिपपटिंपपटिंपप	
"ऋपवपऋ"	"ल्जपवपल्ज"	०००,०१०,०११	पपठिपपठिंपपठिंपप	
"ॠपवपॠ"	"ह्लपवपह्ल"	००१,०१०,१११	पपडिपपडिंपपडिंपप	
"लृपवपलृ"	"ह्लपवपह्ल"	००२,०१०,२११	पपढिपपढिंपपढिंपप	
"लृपवपलृ"	"ह्लपवपह्ल"	००३,०१०,३११	पपणिपपणिंपपणिंपप	
	"ह्लपवपह्ल"	००४,०१०,४११	पपतिपपतिंपपतिंपप	
"झपवपझ"		००५,०१०,५११	पपथिपपथिंपपथिंपप	
"छपवपछ"	"हुपवपहु"	००६,०१०,६११	पपदिपपदिंपपदिंपप	
"ट्रपवपट्र"	"हूपवपहू"	००७,०१०,७११	पपधिपपधिंपपधिंपप	
"ट्रपवपट्र"	"हूपवपहू"	००८,०१०,८११	पपनिपपनिंपपनिंपप	
"ड्रपवपड्र"	"हूपवपहू"	००९,०१०,९११	पपपिपपपिंपपपिंपप	
"ड्रपवपड्र"	"हुपवपहु"		पपफिपपफिंपपफिंपप	
"ॠपवपॠ"	"हूपवपहू"	०००.०१०.०११	पपबिपपबिंपपबिंपप	
"ॡपवपॡ"	"रूपवपरू"	००१.०१०.१११	पपभिपपभिंपपभिंपप	
"हपवपह"	"रूपवपरू"	००२.०१०.२११	पपमिपपमिंपपमिंपप	
"ळपवपळ"	"दुपवपदु"	००३.०१०.३११	पपयिपपयिंपपयिंपप	
	"दूपवपदू"	००४.०१०.४११	पपरिपपरिंपपरिंपप	
"क्तपवपक्त"	"दूपवपदू"	००५.०१०.५११	पपलिपपलिंपपलिंपप	
"रूपवपरू"		००६.०१०.६११	पपळिपपळिंपपळिंपप	
"रूपवपरू"		००७.०१०.७११	पपविपपविंपपविंपप	
"टृपवपटृ"		००८.०१०.८११	पपशिपपशिंपपशिंपप	
"टृपवपटृ"		००९.०१०.९११	पपषिपपषिंपपषिंपप	
"ठृपवपठृ"			पपसिपपसिंपपसिंपप	
"डृपवपडृ"				

pg 12/18

pg 13/18

पपध्कपपध्खपपघापपघ्यपपघ्हपपघ्यप
पघ्छपपघजपपघझपपघञपपघटपपघठपपघ्ठप
पघढपपघणपपघत्तपपघथपपघदपपघधपपघनप
पघ्नपपघमपपघफपपघबपपघभपपघमपपघयप
पघ्नपपघ्रपपघ्लपपघळपपघळपपघवप
पघ्शपपघषपपघसपपघ्हपपघक्कपपघ्खपपघाप
पघजपपघ्हपपघढपपघफपपघ्यपप

पपइकपपइखपपइगपपइघपपइङपपइचप
पइछपपइजपपइझपपइञपपइटपपइठपपइडप
पइढपपइणपपइतपपइथपपइदपपइधपपइनप
पइत्तपपइमपपइफपपइबपपइभपपइम्पपइयप
पइप्पपइरपपइल्पपइळपपइळपपइवपपइशप
पइषपपइसपपइहपपइक्कपपइखपपइगपपइजप
पइहपपइढपपइफपपइयपप

पपड्कपपड्खपपड्गपपड्घपपड्ङपपड्चप
 पड्छपपड्जपपड्झपपड्झपपड्ठपपड्ठुप
 पड्ढपपड्णपपड्त्तपपड्थपपड्दपपड्धपपड्न्प
 पड्त्तपपड्पपपड्फपपड्बपपड्भपपड्मपपड्यप
 पड्प्रपपड्रपपड्लपपड्ळपपड्ळपपड्वपपड्शप
 पड्षपपड्सपपड्हपपड्कपपड्खपपड्गपपड्जप
 पड्डपपड्ढपपड्फपपड्यपप

less common half-forms

पपदकपपदखपपद्यापपद्यपपदहपपद्यपपदछप
पदजपपदझपपदञपपदटपपदठपपदडपपदढप
पद्यापपद्यतपपद्यथपपद्यदपपद्यधपपद्यनपपद्यमप
पद्यफपपद्यबपपद्यभपपद्यमपप पपद्ययपपद्वलप
पद्वळपपद्यमवपपद्वशापप पपद्यषपपद्वसपपद्वहपप

पपद्धकपपद्धखपपद्धगपपद्धघपपद्धङपपद्धचपपद्धछप
पद्धजपपद्धझपपद्धञपपद्धटपपद्धठपपद्धडपपद्धढप
पद्धणपपद्धतपपद्धथपपद्धदपपद्धधपपद्धनपपद्धमप
पद्धफपपद्धबपपद्धभपपद्धमपप पपद्धयपपद्धलप
पद्धळपपद्धमवपपद्धशापप पपद्धषपपद्धसपपद्धहपप

पपहकपपहखपपहगपपहघपपहङपपहचपपहछप
पहजपपहझपपहञपपहटपपहठपपहडपपहढप
पहणपपहतपपहथपपहदपपहधपपहनपपहमप
पहफपपहबपपहभपपहमपप पपहयपपहलप
पहळपपहमवपपहशापप पपहषपपहसपपहहपप

पपक्रकपपक्रखपपक्रगपपक्रघपपक्रङपपक्रचप
पक्रछपपक्रजपपक्रझपपक्रञपपक्रटपपक्रठप
पक्रडपपक्रढपपक्रणपपक्रतपपक्रथपपक्रदप
पक्रथपपक्रनपपक्रमपपक्रमपपक्रमपपक्रमपपक्रमप
पपक्रयपपक्रलपपक्रळपपक्रमपवपपक्रशाप
पपक्रमपपक्रमपपक्रमपप

पपरकपपरखपपरगपपरघपपरङपपरचप
परछपपरजपपरझपपरञपपरटपपरठप
परडपपरढपपरणपपरतपपरथपपरदपपरधप
परनपपरमपपरफपपरबपपरभपपरमपप
परयपपरलपपरळपपरमपवपपरशाप
परषपपरसपपरहपप

पपग्रकपपग्रखपपग्रापपग्रघपपग्रङपपग्रचपपग्रछप
पग्रजपपग्रझपपग्रञपपग्रटपपग्रठपपग्रडपपग्रढप
पग्रापपगतपपग्रथपपग्रदपपग्रधपपग्रनपपग्रमप
पग्रफपपग्रबपपग्रभपपग्रमपप पपग्रयपपग्रलपपग्रळप
पग्रमपवपपग्रशापप पपग्रषपपग्रसपपग्रहपप

पपघ्रकपपघ्रखपपघ्रापपघ्रघपपघ्रङपपघ्रचपपघ्रछप
पघ्रजपपघ्रझपपघ्रञपपघ्रटपपघ्रठपपघ्रडपपघ्रढप
पघ्रापपघ्रतपपघ्रथपपघ्रदपपघ्रधपपघ्रनपपघ्रमप
पघ्रफपपघ्रबपपघ्रभपपघ्रमपप पपघ्रयपपघ्रलपपघ्रळप
पघ्रमपवपपघ्रशापप पपघ्रषपपघ्रसपपघ्रहपप

पपच्रकपपच्रखपपच्रापपच्रघपपच्रङपपच्रचपपच्रछप
पच्रजपपच्रझपपच्रञपपच्रटपपच्रठपपच्रडपपच्रढप
पच्रापपच्रतपपच्रथपपच्रदपपच्रधपपच्रनपपच्रमप
पच्रफपपच्रबपपच्रभपपच्रमपपच्रयपपच्रलपपच्रळप
पच्रमपवपपच्रशापप पच्रषपपच्रसपपच्रहपप

पपज्कपपज्खपपज्गपपज्घपपज्ङपपज्चपपज्छप
पज्जपपज्झपपज्झपपज्जटपपज्जठपपज्जडपपज्जढप
पज्जापपज्जतपपज्जथपपज्जदपपज्जधपपज्जनपपज्जमप
पज्जफपपज्जबपपज्जभपपज्जमपपज्जयपपज्जलप
पज्जळपपज्जमवपपज्जशापप पज्जषपपज्जसपपज्जहपप

पपझकपपझखपपझापपझघपपझङपपझचप
पझछपपझजपपझझपपझञपपझटपपझठपपझडप
पझढपपझणपपझतपपझथपपझदपपझधपपझनप
पझमपपझफपपझबपपझभपपझमपप पपझयप
पझलपपझळपपझमवपपझशापपपझषपपझसप
पझहपप

पपञकपपञखपपजापपञघपपञङपपञचप
पञछपपञजपपञझपपञञपपञटपपञठप
पञडपपञढपपञणपपञतपपञथपपञदपपञधप
पञनपपञमपपञफपपञबपपञभपपञमपपञयप
पञलपपञळपपञमवपपञशापप पपञषपपञसप
पञहपप

पपणकपपणखपपणापपणघपपणङपपणचपपणछप
पणजपपणझपपणञपपणटपपणठपपणडपपणढप
पणापपणतपपणथपपणदपपणधपपणनपपणमप
पणफपपणबपपणभपपणमपप पपणयपपणलप
पणळपपणमवपपणशापप पपणषपपणसपपणहपप

पपत्कपपत्खपपत्तापपत्घपपत्ङपपत्चपपत्छप
पत्जपपत्झपपत्ञपपत्टपपत्ठपपत्डपपत्ढप
पत्तापपत्तपपत्थपपत्तपपत्तपपत्तपपत्तपपत्तप
पत्तपपत्तपपत्तपपत्तपपत्तपपत्तपपत्तप
पत्तपपत्तपपत्तपपत्तपपत्तपपत्तप
पत्तपपत्तपपत्तपपत्तपपत्तप

पपश्कपपश्खपपश्गापपश्घपपश्ङपपश्चपपश्छप
पश्जपपश्झपपश्ञपपश्टपपश्ठपपश्डपपश्ढप
पश्णापपश्तपपश्थपपश्दपपश्धपपश्नपपश्मप
पश्फपपश्बपपश्भपपश्मपप पपश्यपपश्लप
पश्ळपपश्मवपपश्शापप पपश्षपपश्सपपश्हपप

पपध्रकपपध्रखपपध्रापपध्रघपपध्रङपपध्रचपपध्रछप
पध्रजपपध्रझपपध्रञपपध्रटपपध्रठपपध्रडपपध्रढप
पध्रापपध्रतपपध्रथपपध्रदपपध्रधपपध्रनपपध्रमप
पध्रफपपध्रबपपध्रभपपध्रमपप पपध्रयपपध्रलप
पध्रळपपध्रमवपपध्रशापप पपध्रषपपध्रसपपध्रहपप

पपञ्कपपञ्खपपन्नापपन्घपपन्ङपपन्चपपन्छप
पन्जपपन्झपपन्ञपपन्टपपन्ठपपन्डपपन्ढप
पन्नापपन्तपपन्थपपन्तपपन्तपपन्तपपन्तप
पन्तपपन्तपपन्तपपन्तपपन्तपपन्तप
वपपन्शापप पपन्षपपन्सपपन्हपप

पपफ्रकपपफ्रखपपफ्रापपफ्रघपपफ्रङपपफ्रचपपफ्रछप
पफ्रजपपफ्रझपपफ्रञपपफ्रटपपफ्रठपपफ्रडपपफ्रढप
पफ्रापपफ्रतपपफ्रथपपफ्रदपपफ्रधपपफ्रनपपफ्रमप
पफ्रफपपफ्रबपपफ्रभपपफ्रमपप पपफ्रयपपफ्रलप
पफ्रळपपफ्रमवपपफ्रशापप पपफ्रषपपफ्रसपपफ्रहपप

पपप्रकपपप्रखपपप्रगपपप्रघपपप्रङपपप्रचप
पप्रछपपप्रजपपप्रझपपप्रञपपप्रटपपप्रठप
पप्रडपपप्रढपपप्रणपपप्रतपपप्रथपपप्रदपपप्रथप
पप्रनपपप्रपपपप्रफपपप्रबपपप्रभपपप्रमपप
पप्रयपपप्रलपपप्रळपपप्रपपवपपप्रशपप
पपप्रषपपप्रसपपप्रहपप

पपक्कपपक्खपपक्कापपक्क्यपपक्कपपक्क्यपपक्कप
पक्कपपक्कापपक्कापपक्कपपक्कपपक्कपपक्कप
पक्कापपक्कपपक्कपपक्कपपक्कपपक्कपपक्कप
पक्कपपक्कपपक्कपपक्कपपक्कपपक्कपपक्कप
पक्कपपक्कपपक्कपपक्कपपक्कपपक्कपपक्कप